आचार्य जयसेन प्रथम

जीवन-परिचय : आचार्य जयसेन लाडवागड संघ के विद्वान थे। इन्होंने अपने ग्रन्थ धर्मरत्नाकर में अपनी गुरु परम्परा इस प्रकार दी है—धर्मसेन के शिष्य शान्तिषेण, शान्तिषेण के शिष्य गोपसेन, गोपसेन के शिष्य भावसेन और भावसेन के शिष्य जयसेन थे। इनका वंश योगीन्द्रवंश है। जयसेन तप के द्वारा पाप समूह का नाश करनेवाले और पारदर्शी विद्वान रहे हैं।

जयसेन ने अपने ग्रन्थ 'धर्मरत्नाकर' में रचनाकाल अंकित किया है। उसके अनुसार विक्रम संवत् 1055 में धर्मरत्नाकर ग्रन्थ की समाप्ति हुई है। इस आधार पर जयसेन का समय विक्रम की 10-11वीं शताब्दी माना जाता है।

रचना-परिचय : आचार्य जयसेन प्रथम की एक मात्र रचना प्राप्त है—

धर्मरत्नाकर : इस ग्रन्थ में आचार और तत्त्वज्ञान का विषय वर्णित है। ग्रन्थ के नाम के अनुसार ही इसमें रत्नत्रय, श्रावक के बारह व्रत, सात तत्त्व आदि का विस्तृत वर्णन है। ग्रन्थ में 20 अध्याय हैं और भाषा संस्कृत है।